हिन्दी प्रेस क्लब

BharatX PRESENTS
Oasis '22
DEMESNE OF THE LOST GOLD
50TH EDITION | 19TH TO 23RD NOVEMBER

प्रवाह

दिवस 4, अंक 1

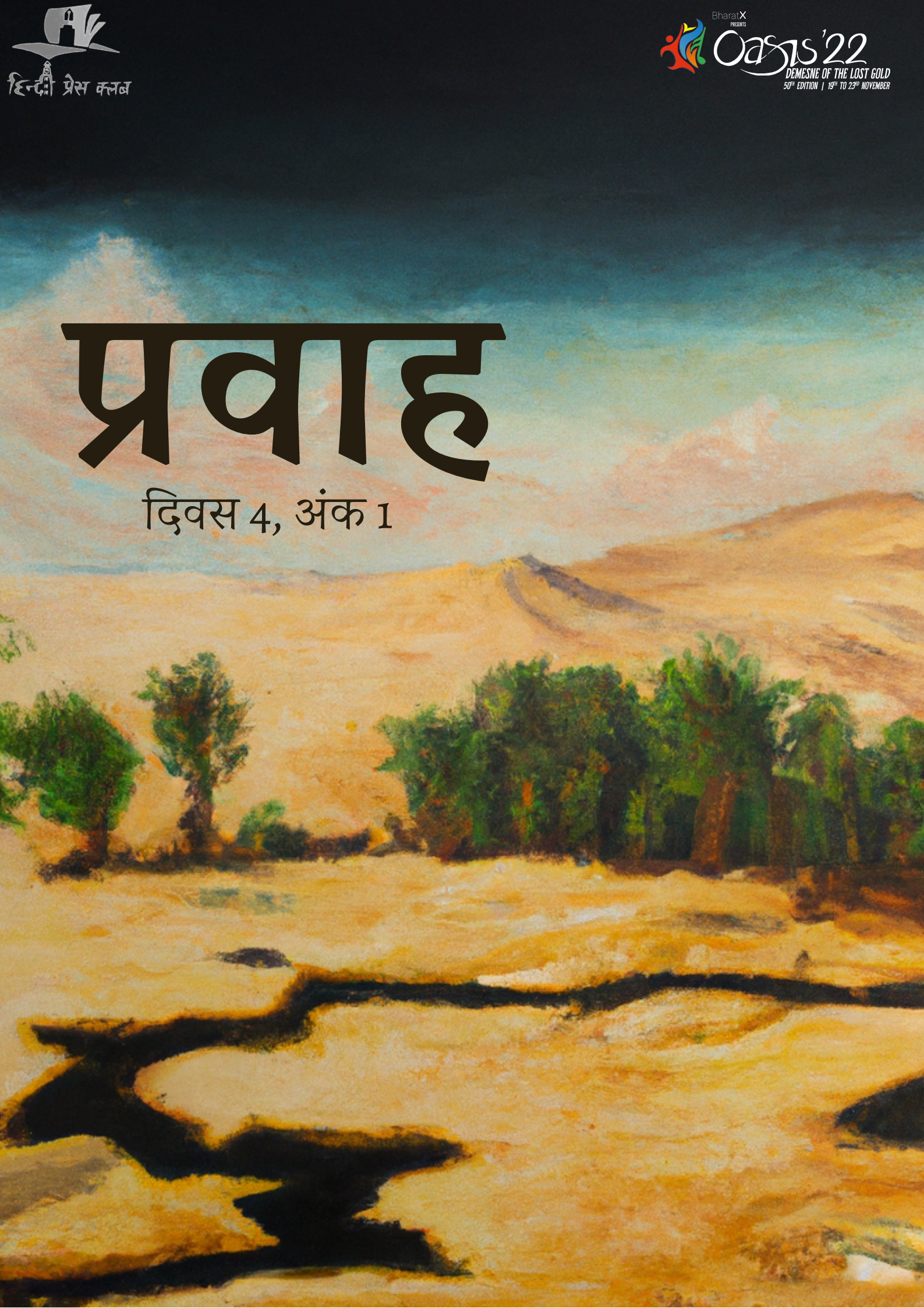

संपादकीय

मनुष्य जीवन का उल्लेख अक्सर एक सफ़र के रूप में किया जाता है। इस सफ़र में खुशी और ग़म कब मिलेंगे इसका आभास पहले से नही होता है। परन्तु एक चीज़ जो निश्चित तौर पर मिलती है वह है- 'सीख'। यह सीख हमें मिलती है हमारे अनुभवों से।

ओएसिस 2022 अब अपने आखरी पड़ाव पर है। पिछले कुछ दिन, समय का मानो कोई ठिकाना ही नही रहा है। ओएसिस के बीते चार दिन भी एक तरह का सफ़र ही था। हर तरफ लोग अपने नीरस दिनचर्या से अलग हटकर कैंपस पर हो रहे इवेंट्स का लुत्फ़ उठाना चाहते थे। क्लब एवं डिपार्टमेंट से जुड़े लोग प्रतिभागियों की सुविधा सुनिश्चित करने में जुटे थे।

कुछ माह पूर्व जब मुझे हिंदी प्रेस क्लब के ओएसिस समन्वयक की ज़िम्मेदारी सौपी गयी तब मैं खुश तो था ही परन्तु आगे आने वाली चुनौतियों के लिए चिंतित भी था। इस दौरान मुझे अपने सीनियर्स का काफ़ी सहयोग मिला। ओएसिस 2019 में हिंदी प्रेस क्लब के समन्वयक की भूमिका निभाने वाले रितिक रंजन भैया ने फेस्ट में प्रबंधन एवं इवेंट्स से जुड़े काफ़ी महत्वपूर्ण जानकारी साझा किये। कुछ दिनों में मैं आगे आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए उत्सुक था। ओएसिस के लगभग 2 महीने पहले से ही इवेंट और फेस्ट से जुड़े अन्य चीज़ों के लिए StuCCA के साथ हर दुसरे या तीसरे दिन बैठक होते थे। इसके अलावा वॉलमैग(wallmag) और newsletter से जुड़े कार्य भी साथ-साथ चल रहे थे। इस सफ़र में मेरे सहयात्री, आदित्य वर्मा का योगदान सराहनीय था। हमारे बीच एक आपसी समझ विकसित हो गयी थी जिसने हमारे कार्य को काफ़ी हद तक सहज बना दिया।

हमारे इवेंट Bluffmaster में अपेक्षा से कही ज्यादा प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस इवेंट की सफलता का श्रेय क्लब के सभी सदस्यों को जाता है। एक प्रेस क्लब होने के नाते हमारा कार्य अपने इवेंट के अलावा अन्य क्लबों द्वारा आयोजित कार्यक्रमों को कवर कर अपने newsletter के माध्यम से प्रकाशित करना होता है। यह काफ़ी मेहनत वाला काम होता है, जिसमें एडिटिंग(editing) से लेकर फॉरमैटिंग(formatting) तक सभी काम सदस्यों द्वारा ही किया जाता है।

ओएसिस 96 घंटों तक लगातार चलता है और, एक ही समय पर एक से ज्यादा इवेंट चल रहे होते हैं, ऐसे में आखिर आप दोनों जगह पर मौजूद तो हो नही सकते, इसलिए आपको उनमें से कोई एक चुनना पड़ता है। ऐसा ही कुछ खेल इस जीवन रुपी सफ़र में भी होता है। ऐसे में "ये जवानी है दीवानी" मूवी का एक कथन- "कितनी भी कोशिश कर लो जीवन में कुछ न कुछ तो छूटेगा ही", बिलकुल सटीक साबित होता है। जीवन में अक्सर हमें दो में से कोई एक राह चुननी पड़ती है।

सभी के जीवन में कुछ ऐसे अवसर आते हैं जो प्रत्यक्ष नही तो अप्रत्यक्ष रूप से उनको कुछ ऐसी सीख दे जाते हैं जो उनके दिल पर एक अमिट चाप छोड़ जाते हैं। अतः जीवन में किताबी सीख से ज्यादा महत्व हमें ऐसी अनुभवों से मिली सीख को देना चाहिए, और नए अनुभवों से कभी पीछे नही हटना चाहिए।

अनुक्रमणिका

- सुनहरी यादें
- सुखमंच का सफर
- नमो नमो जी शंकरा...
- गेम ऑफ लाइफ
- Purple Prose
- Razzmatazz
- कॉमेडी का कीड़ा
- सवाल सिनेमा से
- street play

सुनहरी यादें

एक और वर्ष, एक और ओएसिस, कुछ और यादें। कल ही की तो बात लगती है, जब तुम्हारे सीनियर्स ने पहला ओएसिस धूम-धाम से मनाया था। आज तुम सब ओएसिस की स्वर्ण जयंती मना रहे हो। हर ओएसिस में कुछ नए चेहरे देखता हूँ, नए कार्यक्रम देखता हूँ, पर न पुराने चेहरे भूलता हूँ, न यादें। मेरे मन-मस्तिष्क में आज भी हर एक पल ताज़ा है। और इस वर्ष का ओएसिस तो मुझ पर अमिट छाप छोड़ चुका है। मेरी खुशी का ठिकाना नही रहता जब कला, साहित्य, संगीत व सिनेमा का ये अद्भुत संगम मेरी भूमि पर होता है।

देश भर से आये दर्शक जब बिट्स के छात्रों के साथ हिल-मिलकर ओएसिस का आनन्द उठाते हैं, तो मैं गर्व से फूल जाता हूँ। समय तेज गति से बदल रहा है। तकनीक के प्रयोग ने ओएसिस के आयोजन को अत्यंत सुगम कर दिया है, किन्तु कुछ परम्पराएं आज भी कायम है। अब बी.एस.टी. ही ले लीजिए। वर्षों पूर्व भी आमतौर पर कार्यक्रम देर से ही आरम्भ होते थे, और आज भी यह प्रथा जारी है। ये 96 घंटे का आयोजन हर वर्ष निरंतर पढ़ाई के बीच एक विराम की तरह होता है। जो थके-हारे छात्रों को नई ऊर्जा से भर देता है। ये वो चार दिन होते हैं, जब मैं सोना भूल जाता हूँ। कुछ याद रहता है तो वो होता है रोमांच, मनोरंजन व उत्साह। मेरे हर कोने में चहल-पहल होती है।

ओएसिस एक मंच की तरह होता है, जो युवा प्रतिभा को अपना हुनर निखारने का अवसर देता है। मैंने 2016 के सिद्धान्त शर्मा को 2022 के 'सीधे मौत' में बदलते देखा है। भवन-कक्ष पर ताले लटके रहते हैं। सारे छात्र मिलकर वातावरण को गुंजायमान कर देते हैं। मैं उद्घाटन समारोह से समापन तक ओएसिस की धुन पर थिरकता रहता हूँ। हर कार्यक्रम में विद्यार्थी हर्षोल्लास से भाग लेते हैं। खुले आकाश को निहारने से लेकर , अंताक्षरी तक। प्रश्नोत्तरी से लेकर, निर्माण तक। चौपाल से लेकर, ब्लफ़मास्टर तक। पानी-पूरी चैलेंज से लेकर नुक्कड़-नाटक तक। क्या कुछ नही होता ओएसिस में। मैंने कई महान हस्तियों के पदचिह्न भी अपने ऊपर उकरते हुए देखे हैं। मुख्य अतिथि के रूप में कई दिग्गजों ने यहाँ शिरकत की है। जब ओएसिस आने वाला होता है, मैं उमंग से भर जाता हूँ।

लेकिन यह मौज-मस्ती का समय जब जाने वाला होता है, ये सोचकर ही मन भारी हो जाता है। मगर यह ओएसिस है जनाब, यहाँ मन भारी नही, हल्का किया जाता है। और इसके लिए N_2O है ना। इसी के साथ अंत होता है, स्वर्णिम ओएसिस का। छात्र निकल पड़ते हैं, किताबों की तरफ, और मैं दिल थामे प्रतीक्षा करता हूँ अगले ओएसिस की। जहाँ हम फिर से जुटेंगे और फिर से अनुभव करेंगे एक और अद्भुत ओएसिस का।

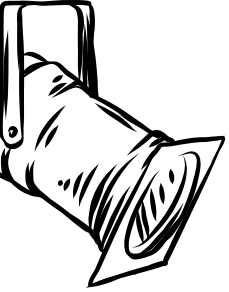

सुखमंच का सफर

दिल्ली से आये 'सुखमंच' के कलाकारों ने ओएसिस हिन्दी प्रेस से बात कर अपने विचार साझा किए। प्रस्तुत हैं उनसे हुई बातचीत के कुछ प्रमुख अंश।

प्रश्न: सुखमंच की शुरुआत कब हुई और इस उद्देश्य के लिए आपने इतनी विशाल टीम कैसे एकत्र की?
उत्तर: मैं 17 वर्षों से एक थिएटर आर्टिस्ट हूँ और 2017 में मैंने सुखमंच ग्रुप की स्थापना की थी। जिसका नाम मेरी माँ के नाम से प्रेरित है। हमारी टीम में जितने भी आर्टिस्ट हैं, वह सभी मेरे छात्र हैं, और हम साथ मिलकर समाज के कुछ अहम मुद्दों को अपनी कला से दर्शाते हैं।

प्रश्न: आपका और BITS पिलानी का नाता कितने वर्षों से चला आ रहा है?
उत्तर: सुखमंच की स्थापना (2017) के बाद से प्रत्येक ओएसिस में हमने BITS में नाटक पेश करे हैं।

प्रश्न: आपने अपनी प्रस्तुति के बाद बताया था कि सुखमंच कही भी नाटक पेश करने के पैसे नही लेता, तो यह संस्था कैसे चलती है?
उत्तर: जैसा कि मैंने बताया, मेरी टीम में सभी छात्र हैं। मैं थिएटर कला पढ़ाकर जो भी धनराशि कमाती हूँ, उसी से यह ग्रुप उन्नति करता है। साथ ही मेरी टीम भी एक निश्चित नही है। छात्र यह कला सीखकर थिएटर व सिनेमा में नए अवसरों की तलाश में निकल जाते हैं और उनका स्थान और लोग ले लेते हैं।

प्रश्न: पिछले 2 दिनों में आपने जो नाटक प्रस्तुत किए, वे दोनों ही बहुत गंभीर मुद्दों पर आधारित थे। क्या आपके सभी नाटक इसी सामान होते हैं?
उत्तर: नही, सुखमंच ऐसे गहरे विषयों के साथ ही कई रंगीन और हसमुख नाटक भी करता है। ओएसिस में यह मुद्दे चुनने का कारण था कि यहाँ सभी नवयुवा मौजूद हैं, तो समाज में अच्छी बातों का प्रचलन करने हेतु, इनसे बढ़कर कोई नही। हम इस पीढ़ी को शिक्षित करना चाहते थे कि अगर यह कही ऐसा कुछ देखें, तो उसके खिलाफ़ अपनी आवाज़ उठाएँ।

प्रश्न: आपके कल के नाटक में अनेक महिला भूमिकाएँ थी। इन सब में से आपने वो एक ही क्यों चुनी?
उत्तर: थिएटर में आप जो स्टेज पर मार-पीट और धक्का-मुक्की देखते हैं, वो सब वास्तविकता में किया जाता है। असली जैसे होने के कारण ही हम दर्शकों के रोंगटे खड़े करने में सफल हो पाते हैं। उस भूमिका में चोट लगने का खतरा अधिक होता है, इसलिए मैं अपने छात्रों को ना देकर यह भूमिका स्वयं निभाती हूँ।

प्रश्न: ड्रग्स पर नुक्कड़ नाटक में आपने बताया कि जब कुछ वर्ष पहले आपके जीवन में हादसा हुआ तो आपने सही राह चुनी। क्या हम जान सकते हैं कि आप उस मानसिक आघात से अपने आप को उपर उठाने में कैसे सक्षम रही?
उत्तर: सच बात तो यह है कि जिंदगी में चाहे जितनी भी मुसीबतें हों, को भी संघर्ष इतना कठिन नही है कि उससे इल्झने के लिए आप अपने आपको drugs नामक एक और ट्रामा से गुजरने दें। मैंने अपने माता-पिता की मृत्यु को समय के साथ-साथ स्वीकार करना सीखा। ध्यान बटाने के लिए मैंने उस समय सुखमंच और थिएटर को अधिक समय दिया, और मेहनत कर सफलता भी देखी। आज भी मुझे गम होता है कि मेरे माता-पिता मेरे साथ नही हैं, लेकिन मैं कामना करती हूँ कि वे जहाँ भी हों, मुझसे और मेरे कार्य से खुश हों।

नमो नमो जी शंकरा...

वो रात में गानों की महफ़िल और दोस्तों के साथ झूमते हुए हम इस मस्ती का कोई मुकाबला नही है। एक ऐसी ही महफ़िल ओएसिस की तीसरी रात मशहूर गायक अमित त्रिवेदी ने अपनी सुरीली आवाज़ में सजाई। यह गानों से भरी रात साउथ पार्क में बी.एस.टी. के चलते रात्रि 9 बजे से 11:30 बजे तक आयोजित की गयी थी। शुरुआत से ही गानों ने लोगों का मन मोह लिया। पहले भाग में अमित त्रिवेदी जी ने अपने साथी गायकों से परिचय कराया और फ़िर 'नच दी फिरा' जैसे कई मशहूर गाने सामने लाये। इसके बाद 'एटी आजाद लेबल' के नए गानों की पेशकश हुई । तीसरे भाग 'सोंग्स ऑफ इंडिया' में कश्मीर, पश्चिम बंगाल, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब के प्रचलित लोक गीतों ने महफ़िल की शोभा बढ़ाई। इसके बाद कैरिओके में सभी लोग ताल से ताल मिलाते हुए खुद अमित त्रिवेदी बन गये और "घबराहटों को बाय - बाय" कहते हुए समां बांध दिया। अंत में सभी लोग बिना सुध-बुध खोकर जोशीले गानों पर अपने दोस्तों संग मस्ती में झूम उठे। यह गानों से भरी रात बहुत ही शानदार तरीके से आयोजित की गयी थी जिसमें लोग पूरे मज़े लूटते हुए दिखाई दिये और कार्यक्रम अपने सफल अंजाम तक पहुंचा।

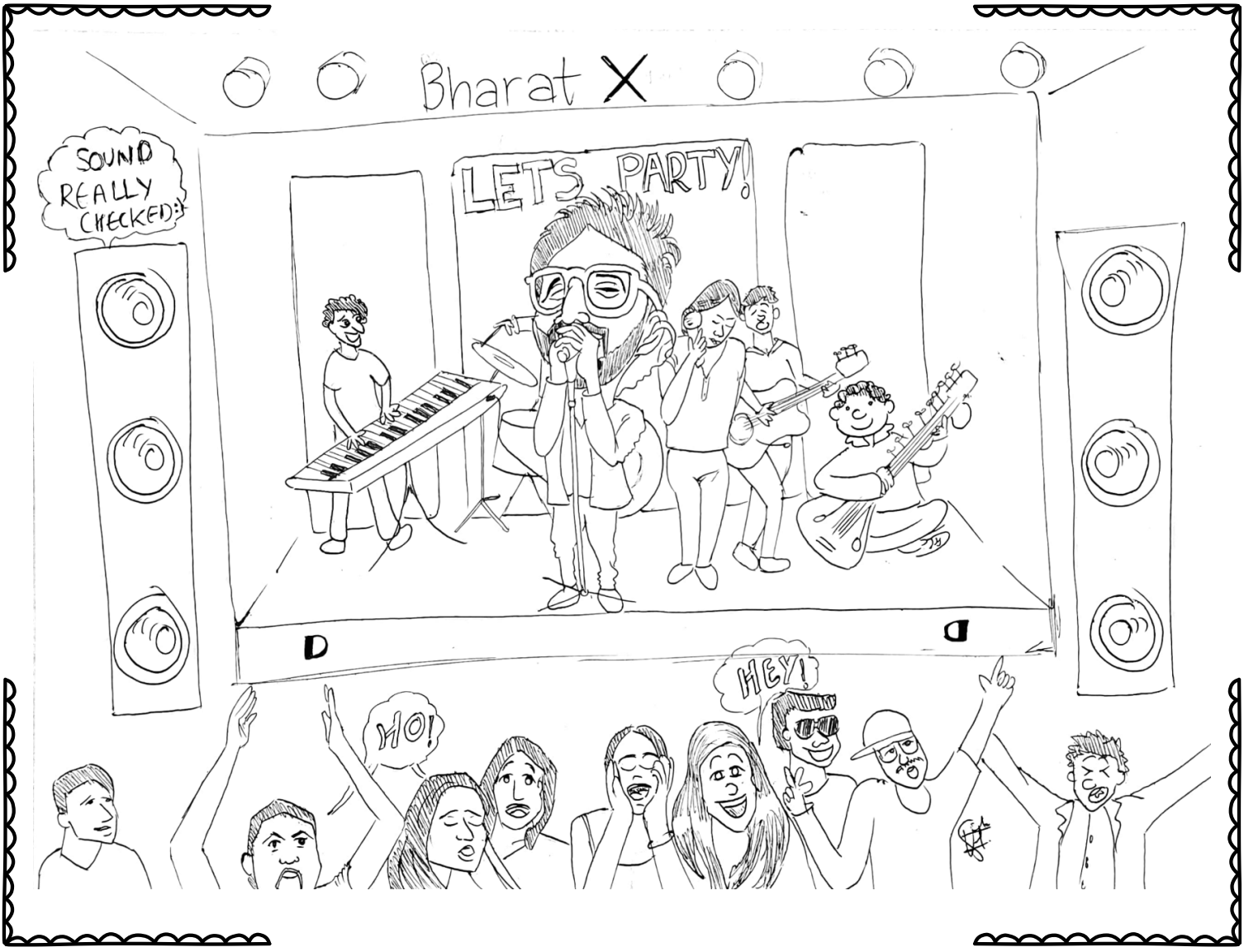

गेम ऑफ लाइफ

“गेम ऑफ लाइफ” कार्यक्रम ऑपरेशंस एवं स्त्रेतेर्जी क्लब द्वारा दो दिन FD1 के कक्ष क्रमांक 1204 में दोपहर 1 से 5 बजे तक करवाया गया था। वे इस कार्यक्रम में इसी नाम के बोर्ड गेम में उद्योग के तत्व डालकर इसे एक नया रूप देते हैं। उन्होंने इस गेम को एक बड़े पैमाने पर खेलने हेतु बोर्ड गेम में प्रयोग होने वाले चरखे को दो पासों से बदल दिया था। इन पासों से तय किया गया था की खिलाड़ी अपना पेशा बिजली उद्योग में बनाएंगे या फिर मोटर उद्योग में। इस खेल में प्रतिभागी खेल के नकद का निवेश कर सकते थे जिससे उन्हें क़र्ज़, नुक्सान एवं आय जैसी वास्तविक चीज़ों का खेल में ही अनुभव मिल सके। अंत में भुगतान दिवस पर जिसकी सबसे अधिक आय होगी वे खेल का विजेता घोषित कर दिए जाएँगे। इस खेल में दो दिन में नब्बे टीमों ने हिस्सा लिया। प्रतिभागियों ने भी उन्हें अनुभव अच्छा बताया और टीमें बाहर होने के बावजूद भी खेल को रोमांचक नजरों से देख रहे थे। विजेताओं को अंक प्रदान किये गए जिसे वे बाद में रुपयों की तरह उपयोग कर सकते हैं।

कविता कोश

किसी ने क्या ख़ूब कहा है “कलम और कायनात में जंग जारी है, दोनों आज भी एक दूसरे पर भारी हैं” ऐसा ही कुछ देखने को मिला पोएट्री क्लब द्वारा आयोजित कार्यक्रम ‘पर्पल प्रोज’ में। ‘पर्पल प्रोज’ की तैयारियों की शुरुआत जून में ही हो चुकी थी जब पोएट्री क्लब ने ‘पर्पले प्रोज’ के पहले चरण का आयोजन देश के 6 विभिन्न शहरों इंदौर, जयपुर, आगरा, दिल्ली, पुणे व हैदराबाद में हुआ। हर शहर से कुछ प्रतिभागियों का चयन ओएसिस में होने वाले दूसरे व अंतिम चरण के लिए हुआ जिसका आयोजन 22 नवम्बर को होना था। यह कार्यक्रम हिन्दी, अंग्रजी और उर्दू की Slam poetry पर आधारित था। निर्णायकों के तौर पर Yellow room पुणे की सदस्या श्रीमती सिमरन एवं रेख्ता, इंदौर के श्री सत्यम सम्राट आचार्य को बुलाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मौजूद कवियों के लघु परिचय एवं पोएट्री क्लब की प्रस्तुति से हुई। उसके बाद सभी प्रतिभागियों को पर्चियों की मदद से एक-एक कर बुलाया गया और फ़िर सिलसिला चालू हुआ कवियों की कल्पना के चित्रण का। कविताएँ इस कदर दिल को छू देने वाली थी कि मौजूद कवियों ने मानो ‘जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि’ कहावत को चरितार्थ कर दिया। बीच-बीच में पोएट्री क्लब ने भी कार्यक्रम के प्रवाह को जारी रखने के लिए अपनी प्रस्तुतियाँ देना जारी रखा। दर्शकों ने भी समय-समय पर तालियों से प्रतीभागियों का समर्थन किया और अंततः पोएट्री क्लब ने निर्णायकों और प्रतिभागियों को स्मृतिचिह्न भेंट किए।

Razzmatazz

"Razzmatazz" बिट्स पिलानी के नृत्य क्लब द्वारा आयोजित की गई एक नृत्य प्रतियोगिता है जिसके प्रतिस्पर्धी बाहरी कॉलेज के छात्र होते हैं। इसमें टीमें भाग लेती हैं और विजेता को मुंबई जाकर अन्तराष्ट्रीय हिप-होप प्रतियोगिता में भाग लेने का अवसर मिलता है। इस कार्यक्रम को दूसरे और तीसरे दिवस में किया गया था जिसमें से पहला दिवस एलिमिनेटर था और दूसरे में अंतिम प्रदर्शन किया गया। अंतिम पड़ाव में 6 टीमों ने अपनी जगह सुनिश्चित करी और मुख्य सभागार में दो प्रसिद्ध नर्तकियों के समक्ष अपनी कला प्रस्तुत की। इन दो जजों ने भारत का अन्तराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधित्व किया है जिनके अंकों पर इन प्रतियोगियों की मुंबई की टिकेट कटेगी। अंतिम पड़ाव को दो हिस्सों में कराया गया था जिसमें पहले हर टीम अपना तैयार किया हुआ नृत्य पेश करेंगे और फिर उन्हें जो प्रोप दिया जाएगा उन्हें उसका उपयोग करके 15 मिनट में एक नृत्य तैयार करना होगा। दूसरे भाग के लिए उन्हें अपना गीत चुनने की भी पूरी छूट दी गयी थी। टीमों को प्रोप्स के रूप में छत्री, चादर, अख़बार, गुब्बारे, रस्सी एवं कुर्सियां दी गयी थी। इस पूरे कार्यक्रम में नर्तकियों को दर्शकों का अच्छा-ख़ासा समर्थन मिला और हर प्रदर्शन को तालियों और शोर से सरहाया गया। विजेता प्रतियोगिता के बाद घोषित नही किये गए, केवल यह ऐलान हुआ कि नृत्य क्लब बहुत जल्द नतीजे घोषित करेंगे।

कॉमेडी का कीड़ा

भारत के शहरों में एक बहुत ही अनोखी प्रजाति पाई जाती है जिसे इंजीनियर कहा जाता है। यह मैगी चरते हैं और चाय पीकर जिंदा रहते हैं। नर इंजीनियरों की तुलना में मादा इंजीनियरों की संख्या बहुत कम है, परन्तु हर साल जंगली इंजीनियरों की आबादी बढ़ती जा रही है। खास बात यह है कि इंजीनियर एक मात्र ऐसा जानवर है, जो चाहता है कि उन्हें कोई पकड़ कर ले जाये। वह कॉलेज के चार साल कोशिश करता है कि उसे कोई IT कंपनी बंदी बनाकर ले जाए। वह ENGINEERING छोड़ कर हर क्षेत्र में माहिर होते हैं। ऐसा ही एक क्षेत्र है स्टैंड - अप कॉमेडी , जो आजकल बहुत प्रचलित है। स्टैंड - अप कॉमेडी में हास्य कलाकार स्टेज पर आकर चुटकुले सुनाते हैं और दर्शकों का मनोरंजन करते हैं।

बिट्स के कुछ इंजीनियर छात्रों को भी स्टैंड - अप कॉमेडी के कीड़े काटा है। इन छात्रों के लिए कॉमहब ने ओएसिस 2022 में "मिराज" का आयोजन किया। यह कार्यक्रम बिलकुल पैसा वसूल था, क्योंकि उसमें किसी प्रकार का प्रवेश शुल्क नही था। "मिराज" एक कॉमेडी कार्यक्रम है और इसमें कई हास्य कलाकारों ने हिस्सा लिया। यह नैब के सभाघर में आयोजित किया गया था। "मिराज" अपने सूचित समय से शुरु हो गया, जो ओएसिस में दुर्लभ दृश्य है। ऐसा इसलिए है क्योंकि कॉमहब ने ओएसिस ऐप के माध्यम से जनता को बता दिया था, कि यदि मिराज समय से खत्म नही हुआ तो आप अमित त्रिवेदी के संगीत कार्यक्रम के लिए देर से पहुँचेंगे। नैब का सभाघर दर्शकों से खचाखच भरा हुआ था। जिन्हें बैठने के लिए कुर्सी नही मिली, वह ज़मीन पर ही बैठ कर कार्यक्रम शुरु होने का बेसबरी से इंतज़ार करने लगे। जब शो शुरु हुआ तब पूरा हॉल तालियों से गूँज उठा। दर्शकों ने प्रत्येक कलाकार की ख़ूब वाहवाही की और प्रोत्साहन किया। दो घंटों तक लगातार हॉल में हँसी के ठहाके लगते रहे। कलाकारों ने कई विषयों पर चुटकुले सुनाये - पढ़ाई , अपनी प्रेम कथा और यहाँ तक की गांधी जी भी।

वह स्वयं राष्ट्रपिता का मज़ाक इसलिए उड़ा पाए क्योंकि यहाँ उन्हें बोलने की पूर्ण आज़ादी दी गई है। यह स्वतंत्रता किसी भी जनतंत्र में जनाधिकार होता है। हमें उस संविधान पर गर्व होना चाहिए जो यह अधिकार जिसने हमें यह आज़ादी दी है। कॉमेडी में दिलों को जोड़ने की ताकत होती है। कहते हैं कि हँसी से अच्छी दवा नही होती। तो यह कॉमेडी का कीड़ा बीमारी नही, बल्कि सभी बीमारियों का इलाज है।

सवाल सिनेमा से

स्कूल के वह दिन याद रह जाते हैं, जब पढ़ाई की जगह कोई फ़िल्म दिखा दी जाती थी। मानो बच्चों की कोई लॉटरी लग गई हो। क्या आपने कभी सोचा है कि अगर फिल्में स्कूल का कोई विषय होती, तो कैसा होता ? क्या प्रतिदिन छात्रों को अलग-अलग फिल्में दिखाई जाती? और ऐसे विषय की परीक्षा कैसे होती?

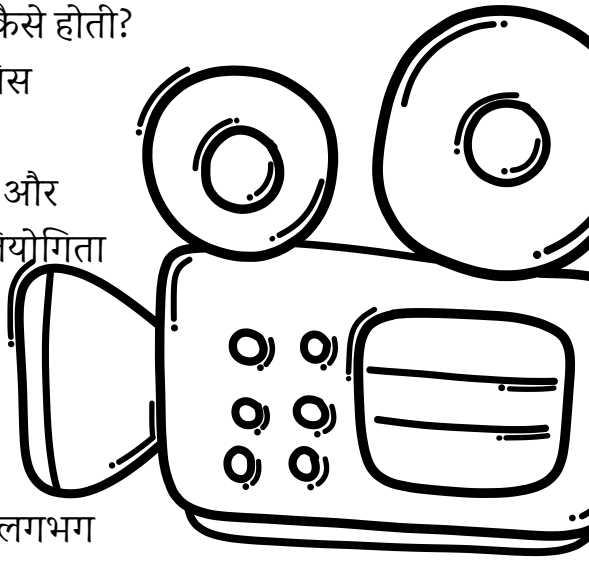

FMAC बिट्स पिलानी का एक ऐसा क्लब है जो फिल्में बनाता है। ओएसिस 2022 के तीसरे दिन FMAC ने एक अनोखे QUIZ का आयोजन किया - "LES QUIZERABLES"। यह QUIZ सिनेमा के दीवानों के लिए था और इसमें देश-दुनिया की कई प्रसिद्ध फिल्मों के बारे में पूछा गया था। इस प्रतियोगिता में तीन राऊंड थे। पहले राऊंड में प्रतियोगियों को किसी अंग्रेजी फ़िल्म से जुड़ी एक छोटी सी जानकारी दी जाती थी, और उन्हें फ़िल्म का नाम लिखना होता था। पहला राऊंड वीडीयो राऊंड था, जिसमें अंग्रेजी और हिंदी फिल्मों का एक छोटा सा दृश्य दिखाया जाता था और प्रतिभागियों को फ़िल्म का नाम बताना पड़ता था। QUIZ की शुरुआत में लगभग 120 प्रतिभागी और 37 टीमें थी और राऊंड 3 में केवल 5 टीमों के बीच कड़ा मुकाबला हुआ। राऊंड 3 बज़र राऊंड था, जो टीम पहले बज़र बजा देती उसे उत्तर देने का मौका मिलता था। फिल्में बनाना अपने आप में एक कला है, और हमेशा से FMAC का उद्देश्य रहा है अच्छी फिल्मों का प्रचार करना। फिल्में मात्र मनोरंजन का स्रोत ही नहीं है, वह हमें जीवन को अलग दृष्टिकोण से देखने में मदद करती हैं।

चांस पे डांस

बिट्स पिलानी के कल्चरल फेस्ट ओएसिस के पचासवें संस्करण के चौथे दिन अमित त्रिवेदी के कॉन्सर्ट के बाद लोगों को मौज-मस्ती की थोड़ी भी कमी नही हुई। रोटुंडा पर डिपार्टमेंट ऑफ थिएटर द्वारा आयोजित स्ट्रीट डांस पर भी लोगों की काफ़ी चहल पहल रही। यह स्ट्रीट डांस फ्री स्टाइल प्रतियोगिता थी जिसमें विभिन्न कॉलेजों की टीमें आई थी। यह प्रतियोगिता तीन चरणों में हुई थी। जिसमें डी.सी., सत्यवती कॉलेज, वेंकी दिल्ली और शहीद भगत सिंह कॉलेज ने हिस्सा लिया। लोग डांस परफॉर्मेंस के लिए काफ़ी उत्साहित थे।

पहले राउंड में सारे कॉलेजों की एकल परफॉर्मेंस थी। दूसरे राउंड में डी.सी. बनाम शहीद भगत सिंह कॉलेज और सत्यवती बनाम वेंकी का मुकाबला हुआ। इस बीच में दर्शकों के लिए दो सरप्राइज़ परफॉर्मेंस भी हुए। पहले एक एकल फ्री स्टाइल डांस था। दूसरे में एक बीट बॉक्सिंग थी, जिसमें एक रैप-बैटल भी शामिल थी। इस सरप्राइज़ परफॉर्मेंस ने दर्शकों को जोश से भर दिया। तीसरे और अंतिम राउंड में शहीद भगत सिंह कॉलेज का सामना वेंकी से हुआ। इस बीच कुत्ते ने भी बीच-बीच में काफ़ी बार डांस परफॉर्मेंस के बीच में रोटुंडा सेंटर पर जाकर बाधा उत्पन्न की। लोगों ने इवेंट का काफ़ी आनंद लिया। अभी आखिरी राउंड के रिजल्ट आने बाकी है, जिसका सभी को बेहद इंतज़ार है।

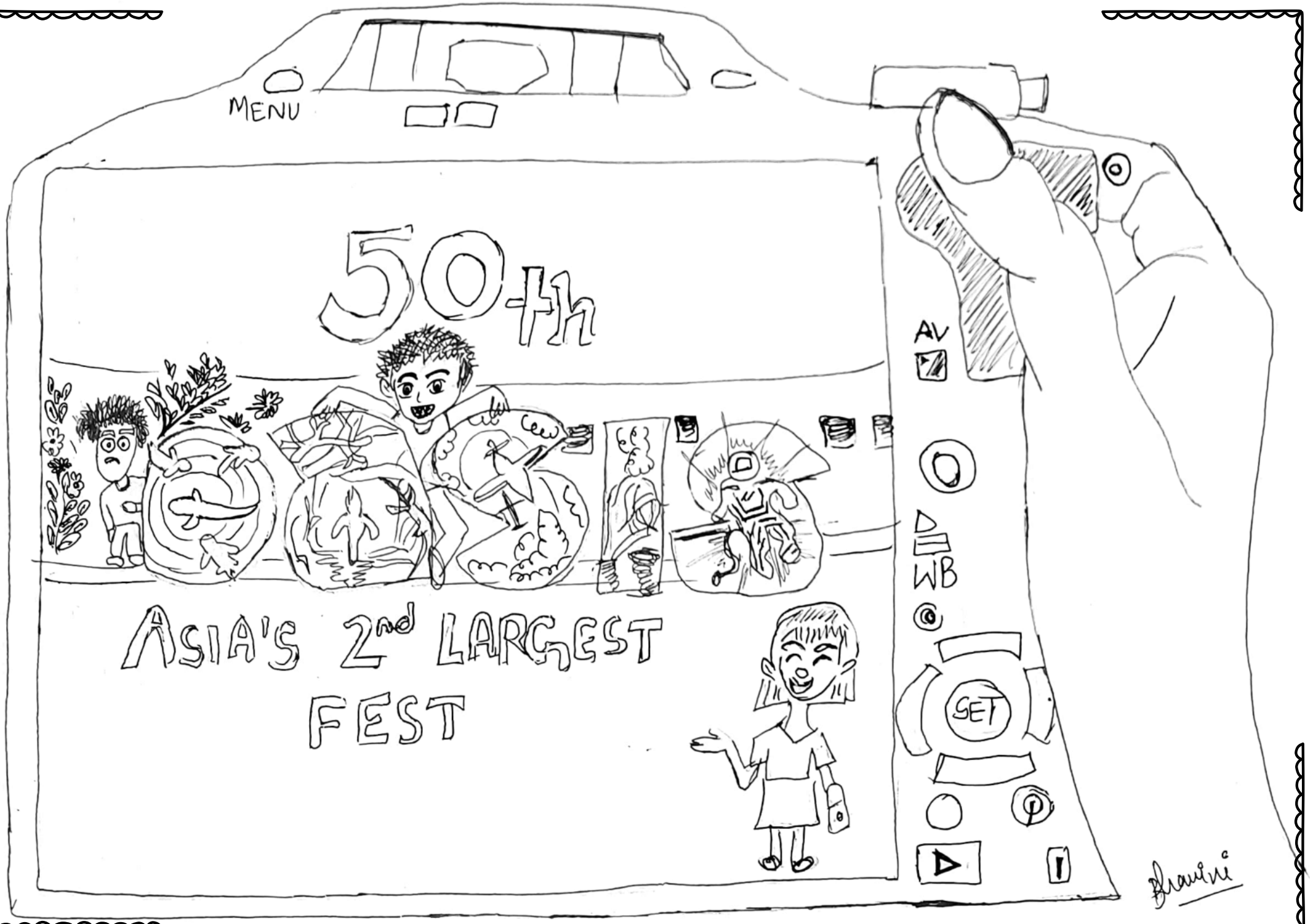
MENU
50-th
ASIA'S 2nd LARGEST
FEST
AV
WB
SET

BharatX
edvanza
Srishti Creating Bestsellers
Irusu
SayF
tikkl
tortoise
Ksheer
itspl Broadband
Coca-Cola
TATA MOTORS
Connecting Aspirations
Gustora
sparx
91 NINETY ONE
BOMBAY SHAVING COMPANY

ओएसिस हिन्दी प्रेस

5 हज़ार, 3 बार, stalls, LBSNAA, Early Grad

टेंशन, Audiforce, Pizzeria, हर्ष अगर्वाल, फॉर्मेटिंग, EDM, शादी, सोल्लू, HAS, Mime, Snaps, Slow

Flash, सुखमंच, हम कर लेंगे, सीनिअर, Password, गुड मोर्निंग, Chemistry, Vape, Crazy, Headphones, लापता

ट्रिपल A, Dj मास्टर, छूमंतर , Full मौज, ओपनर, क्रिएटिव, शर्मिला, प्रॉम, संस्कारी कलाकार, हिंग्लिश, टॉप स्कोरर